

ध्वजध्वक

कविऋमातं नाम पुट्या कथं ॥ गगुऋमात्रे दे आ न ज पृथिमार्ग की ज न ग व क ग पु व अ य न ॥ गगुऋ न ग वं न ज गृह
 रुक्मि अश्वस्ताने। सलम पु ये दे व गा धन कृदा ग यः नाग स्तानेः सर्व हृदि स्थापय ॥ च पूनऋ नृप गि म किं पू
 आदि गं सर्व से न्य पु मूट व र व ये क त्य ना ॥ संग्राम निमि र्दे रुक्मि अश्व य थ पू य य ॥ कृमात्र व च ल उ ला। सर्व
 लाका समूपा सु ए रुद्र क्षण प जा य न ॥ गगुऋ सुख ने ग म न। ने मि लि पू भादि गे न ह क्षा। मन चि न य ॥ अदा
 आश्वर्य म मे न ल र्ध। अक स ना प उ क दि गि य व र्ष म म चि उ गु हृ न ग व पु स्तान य ॥ गगुऋ नृप गि र ॥ द
 न द आ न ज ग म न वा ध न न कृमात्रे द द ॥ अब ग्धू सु ध र्मा व गिः कृमात्र सर्व उ उ न पू नः मो मो च ज म नि ग्ध

सुधर्मावगिनिवागर्तने
 जन्मरुजम १

कासः ॥ १ ॥

गत्कायने क विजक मातृपा

नाकाया अस विविधियाग

हर्षमानयाना पुत्राभ्यधक जना जालाग निपा लाजो न पा पूग पुका

रिगं ॥ १ ॥ उगत्य मातृपुत्रिचिन्तुमादिग ॥ सहसा समुपासु यकृ गार्ज रिपुना मृदा । पूजादिग सय स्य चैव मनु

वन पागु विगियोग
हमलागजक
नविदेकया
हने

वीर ॥ १ ॥ गग ॥ सुधर्माग हुन के माय ॥ योग ॥ जाय सव समागत ॥ ० ॥ ह गम ह वि क ॥ श्री मा नो स्त्री ॥ वागुक अ पि पत्र

ओ नमूनिधये ॥ ० ॥ गि संपाधिगे गड ॥ अवसंर विद्यान ॥ अपजमागा यत्र क माय जाल व ॥ गग ॥ क माय व्या

अजवाध्या
कः ॥ विगियोग गुलना

धा धीने गुम सधि कृण कर्म धदय ग म मने ह ॥ १ ॥ उ वम सु व व न म म स का पे न ॥ विगु र ज ग म न ॥ ० ॥ गि

गि संपा था वा ध नु ॥ अतात नृप गि संल सया ॥ गग ॥ अ प ज मा गा रा ॥ जा ग न को ठ नि गु स्य ॥ र म विद्या न कूट य ॥

हम गिधदर साधुधयोक्त

साध गृ ॥ १ ॥ गग ॥ अ धि क रू धा न ॥ वा य का य स रू प समुद्र ॥ म मे न म कि मू र्वा वि ग्या स य ॥ १ ॥ उ गत्य का य स रू व न नि

कृष्णकर्मणा नाचो नाचिरुन
 अविशुद्धकायया
 साया ३०
 वकीठरु वृक्ष
 जाययात्रितीचात्रयाकर्म
 रुमधमिधक अतोमकजाजा
 कृमात्रयागवीत्रवित्र
 रुमनयायगु ०० कायाकर्म
 जिगु वचनजा
 याकृष्णकर्मणा पिता ॥ कोना ०० ॥ गृह ॥ गृह ॥ कृष्णकृष्णपुल ॥ यायत श्रीनविवाययग ॥ रुमनकल्पनाममवचनन
 ययग ॥ अस्मिदिने ॥ ममपुनसंदरु ॥ मकिवृष्टिहृष्टा ॥ पुन ॥ इष्ट ॥ अपयमागा ॥ ग ० विद्याकर्म ॥ ममदन ॥ वान
 खे ॥ अवतगृह ॥ कादयग ॥ व्याधपुगाममनहृष्टा ॥ मममृष्टुसत्वा ॥ हास्यस्यपुवाधिगा ॥ पुनमकिअस्मि
 दिन ॥ गृह ॥ पायसिष्टुकमवृष्ट ॥ पूर्वकातसमयदकेन ॥ दयनुकाकगुपनसिद्ध ॥ अस्मिदिने सर्वसंन्या
 दिपुकाभयग ॥ सर्वनाष्ट ॥ ग्रीसंपनि ॥ अधिकार ॥ मकिगृह ॥ गव ॥ सर्वमिष्ट ॥ संन्यसर्व ॥ संपूर्ण ॥ धिकाव ॥
 साधुगृहपित्वानेधिपकीरुजीक ॥ साविहृष्टादिगनाग ॥ याववृष्टकिवृष्ट ॥ ममपूर्वमकिप्रमृष्टासर्वपा

सकलं जिरुः सां सकलं बना को धरुया ना
सकलं जिरुः सां सकलं बना को धरुया ना
सकलं जिरुः सां सकलं बना को धरुया ना
सकलं जिरुः सां सकलं बना को धरुया ना
सकलं जिरुः सां सकलं बना को धरुया ना
सकलं जिरुः सां सकलं बना को धरुया ना
सकलं जिरुः सां सकलं बना को धरुया ना
सकलं जिरुः सां सकलं बना को धरुया ना
सकलं जिरुः सां सकलं बना को धरुया ना
सकलं जिरुः सां सकलं बना को धरुया ना

एननुनुवाधिगा ॥ गगु ॥ कूमातविदार्थगां समापुर्दाया घं वधयग ॥ गेगिनागा वचनं शु त्वा मनि पग्धापन
ननालं वगुनगवगया विनकागन हान दयाचीक जवपि त्वानाममं गि काजिरासदापुगास कप्रमनको धकाविनकूमातयागमावजेन सकलनसाइत
सिधुवगुनगसमाच ॥ गगु ॥ समूपाविश्व समकिजनपायिका कूमापुवचनं समकग ॥ धनयावधुति ॥
हान सुधमावगिया नीनेधुगसियाज धजेपुगयाग संपूर्णवालीत्य कनाधाम स एगव जिद कायक धेजयागुदिनेधुगयास केगु जिवयागुआत्मा संसयइज के जित्व
गगु ॥ सुधमा वगि समाचापः पूगं सर्व वा की सवा दयग ॥ ममः पूगः अस्मिन्दिनं वजीवा सां ज सयाः ममन
मधुनरूपगवलेगमा कनध नि गु पुगयादकलज प्रानावित धदरसाधुधयाक के डे देपुग के रसा धधिगु धास वा सनीन्यमावधकादवगायमने पुसंगापया नागन्यमनेधकधन
दृष्टा ॥ यत्तवजमनिपूगं रु सं ददाययग ॥ साधुगु नूपुगं नतं गुमवनाकयसूत्य नं सा गय ॥ पुग्धापनगनयग ॥ ४
मिधांताविहायका स्तुति कल्यानवचन आशिर्वादविया मरुगुफया ना वेनावियो कीने धन कविनकूमान धन धन वलचूगमनिधयाना मनिधयाना चौक वायवकविनकूमावे
सुधमास्वस्तिमगतवचनं आशिर्वादमहागवधे नंददाययग ॥ गगु ॥ वजमनिधायिगे नंदायक कूमापः निर्गम
विस्मयेन हान जवपिधामं गिनं मानामाजहया हिगु हिनागधरुमाकारुन विस्मयेनगु मंकिनेवन सगयग नृपगिनागायापुग धाव जलचूगमनीगज
म ॥ गगु ॥ मनि स्तानस्तानां गवगमनं ॥ गगु ॥ इववनाकयमकिह द्वाः सपवगनृपगिपूगनिश्वय ॥ किं दिवा

कानंधासा

विक्रय

गुफयानाविस्मयजन

लान मलमाजायाजाहगमधन्य

धनकविजकुमान

हमपापनिर्मितिन

सिपादियागअधुयान

लान

यूपःसंप्रकाशयममहागुफेननिर्जगम ॥ गग ॥ स्याम्याहगगीयसीःकूमायंवधनिमिर्दिनेसेन्यसंवादयेन ॥ गग ॥

धनकविजकुमानलान वनापविगधया धन आवावाजन जस्य वि

चंपकनागनागायादहननेस

कावागं संपूर्णसिनि

पादिनाकसकने

कूमायजासनःमृगनिर्जगमचप्रिगंत्वेप्रिगं ॥ चंपकनागवासस्थानपुसग ॥ सर्वसेनपृष्टत्वेप्रिगंरअस

असकयाहन

हाहाकायतायव्या

सदृशना

विनाहने

लान नागनागायास्थाने

धनकविजकुमान

सिपादिमधेना

असपुलायनेःहाहाकायसदृशनेइयग ॥ गग ॥ नागवासस्थानपुसग ॥ सेननःनटक्ष्णसर्वस्थाननिम्ययेन ॥

गनजनगनजनधकधन निर्नययावमके

मंविपिसंमानजन

एवमनुमानमवना

यनकनाम विभाकायसंग

कूगगकूगस्तिग ॥ निर्नूयःमनियत्ननःनटक्ष्णःपगव ॥ वायपूवृषसामूदिःनयपादचिद्रपुष्पासंपूर्ण ॥ कूमाय

लान

मपूवृषनंकविजकुमान

नयकेमरुया

आसा इयतिहाजेल

चलान

धनकविजकुमान

नो दिवापूरुयाची

मलमगद

पदकचायपूवृषपुसयकेसमकेग ॥ धनयावधूति ॥ गगनसम्पासिनंदिवापूमरुत्युहं ॥ सोम्यपंसूर

पदक

नामपूवृषनंकविजकुमान

नयकेमरुया

आसा इयतिहाजेल

चलान

धनकविजकुमान

नो दिवापूरुयाची

आंगेदिवातकायममतिग ॥ मरुकीवाजमनिसंयुक्तैयत्नभरिग ॥ पम्भकैचम्यकनागवाजस्यःगिष्टकै

स्वयगुंययापू

अनेग

गिसानगियाधंवा

नमाकप्रपूवृषकमगे

जवगाग

कोजसनिद्र

मलकल्यान

याना

धनकविजकुमान

नयकेमरुया

आसा इयतिहाजेल

चलान

धनामलहमलनाकप्र

अरुणरुयाचीन

[illegible]

नमः शायीयं कुरुते दुरुते माधव्यं अगं धृत्वरुतकगानं नोपयावियं ज्ञानं गुणमदयके दमदयके दयकावियं क्रिमिगेहमिमपूना जीपनसजाजानं
ज० क० उ० द० द्वा० ग० व० ग० ल० म० व० ग० छं० सु० व० ग० सि० वा० ग० प० थ० ग० ॥ ग० ग० ग० म० द० म० द० आ० दि० ध० प० थ० म० म० ह० य० प० न० नृ० प० मि० कु० ॥
ज० ल० थ० न० य० य० क० म० या० य० ग० साम० थ० द० ज्ञानं ध० यि० के० रु० सा० सु० ख० ने० ना० जी० नि० ना० प० ची० ना० न० गि० क० ज० या० ना० ची० न० ध० सा० वा० स० यो० य० ध० सा० आ० म० अ० न० उ० न०
उ० ज० ल० स्तु० त० स्तु० त० ल० ल० वि० श्रु० ॥ गि० ग० व० सु० द० ध० ने० ना० गी० नि० स्तु० न० न० गि० क० ज० प० ना० थ० ग० ॥ आ० न० नृ० न० वा० स० या० ॥ अ० न० द०
अ० क० वि० न० क० मा० न० ग० ना० दि० ज्ञानं ध० थ० धि० क० ध० ना० ग० या० ग० हि० न० क० श० या० पा० पि० पि० थि० स्थि० रु० का० ध० न० ह० स्तु० ना० ए० क० श० या० अ० ध० न० चि० दि० या० ना० ना० क० मा० न० यु० ध० ज्ञा० न०
अ० क० मा० न० य० या० पि० ग० ॥ ग० मा० सी० ने० स० मा० ला० व० पा० पि० न० रु० स० वि० स्म० या० ॥ जि० म० ग० ए० य० ती० ग० चि० ग० ॥ क्षा० न० द० मा० न० स० वा० द०
ज्ञानं धृ० प्र० क० वि० न० क० मा० न० ना० ग० ना० या० ध० न० स० सु० ध० ने० धृ० प्र० क० मा० न० वा० या० या० ना० धी० न० क० ध० ना० ग० ना० ज्ञानं क० मा० न० या० ग० वृ० द० या० या० न० हि० क० मा० न० जि० ज्ञा० या० य० ग० अ० स० म० र्थि० रु० त०
य० ग० ॥ ग० य० ॥ क० मा० न० ना० ग० ना० ज्ञा० स्तु० न० सु० द० ध० ने० वा० स० थ० ग० ॥ ग० व० ॥ ना० ना० पु० का० न० स० वा० द० य० ॥ क० मा० न० म० धे० ना० स० म० र्थि० या०
ना० ज्ञा० या० ज्ञा० पि० जि० म० वृ० ज्ञा० ज्ञानं क० मा० न० ना० गि० ना० पि० नि० म० क० ज्ञा० न० व० ज्ञा० ना० ची० ना० ज्ञा० धृ० गु० वृ० क० न० र० वे० स० क० ना० ध्या० ज्ञानं हि० क० मा० न० च० का० ज्ञानं
ज० स० मा० ने० म० म० न० दि० ॥ ग० ग० म० स० रु० स्ता० ग० त्वा० ना० ग० ना० ज्ञा० स० स० नि० धि० ॥ ग० ल० य० वृ० ज्ञा० न० नि० धि० द० य० नि० वि० स्तु० न० ॥ कि० का०
अ० सा० डि० गि० स० क० ह० आ० स० प० मि० सु० धा० न० रु० पु० न० धृ० गु० या० स० रु० न० धृ० प्र० क० मा० न० रु० सा० ना० ग० ना० या० अ० न० न० ज्ञा० ना० ची० न० क० ज्ञानं सो० ला० ना०
य० न० स० प० यि० वा० त० शी० स० म० मि० रु० न० ॥ ग० व० ॥ जि० व० रु० न० ॥ दा० य० क० स० च० प० क० स्तु० न० अ० न० न० पु० या० ग० ॥ ग० ग० ॥ म० ह०

कस्तूरी मणिदत्त संस्कृतया चोक्तं धनकमात्रेण नागवाक्यं विस्तारं विगियाग ध्वदशसूत्रं चोक्तं चोक्तं चोक्तं चोक्तं
 यि नूतनमूलि संयुक्ता कूमाय नागवाक्यं निवेदयति विस्तारं ॥ साधुं नूतनागवाक्यं मम गमनी नवममनं
 यत्र कुदयाका नूतन पुस्तक ॥ गगनं दारकस्य नागिसमयं दहनं स्थानं पुस्तकं च यत्र ॥ गगनं प्रागकातं लीला यत्र
 यत्र गिगं यजका वस्तुन पुवि स किमहाभयं यत्र ॥ गगनं पदकस्य नागवास्तुन पुदयं यत्र दृष्ट्वा कूमाय य
 जायते गगनं कुत ॥ दारकस्य पादका चिह्नं सामुद्रिकस्य दृष्ट्वा ॥ विता वरगं महाभयं सविस्मयं एया कूला ४ पु
 गृह स्वसंगस्तानि पयायने गगनं कुत ॥ गगनं यजका वस्तुन पुदयं यत्र ॥ गगनं कूमाय दभयं यत्र यजकाय स्य
 अगिष्टयन दृष्ट्वा मम स्थानं गवर्ज आयागं संकटं न पुवि स्या ॥ मम नय उज्ज्वलं यत्र ॥ मम गृहं सर्वसंन्या

धूपायात्र सधनधका ४

मंगिया द्वाभय धान देम मि महाभान दनं वि स्या ४

६

विजया नाचोन धुगुधु जल जिंयायमान दिगाधोवस दिगादिउजनेधका
दिवालयन गव ४ जत्र वरु गजाक उरु गियत उरु कस्य नदिपावगमन ४ ॥ गगो सो सपवगस्य पूगः समका स
सयजया वादीरगनाजय कूजययाऊससुनाचीन रुधकर्मयायगु समर्थवसाने धविगुसमयसायाज यायमजिअधका लजपेचीन नन प्रका
यन्निगुहा ४ पुविसगै कूमा कातनि वसन ४ ॥ रुधकर्म पुका अन उक मिसमये विवाययन ॥ ॥ गग ४ ज
जकायगु ४ पदके पुविसगै नह द्याः सर्व सन्यो गगावज कावस्ताने कूमाने सन्य ४ ॥ पदक सामूदिकस्य
पात्रियागु विम गन प्रमवनाज जवधिधामेनियोक विस्मांग विनियोग लान विरुधरुतेयायधन धकूमा न ध्रुविविगिया से
वायकस्य पाइ काचि जइल रं दश विद्यानस्य निवदयगि विस्मयं ॥ पुन ४ पग कावाच ॥ ॥ गगिसं प्रार्थ
माना सो गपित्वा नगी मरुमगि ४ पगक वाय पुत्रुष माता वगयगि मेव वीग ॥ गग ४ ससमूपा विग्ध समकि
यादि होरु नमनेका पगकसिजेक धयसस्वया दिउदिगा कौडीजनं जेगु सो यागा धासा दूखरुज लान धधगुखना हाग धकूकविजकू साजया प्रावजा धासा
जनधायिक ४ सामूदि वाय पुत्रुष यथा यथा मार्ग समूपा भयन ॥ गग ४ कूमा कावयाअने कूमानदजनः

अजहगवायाज ४

धनपिताअभधनकनधक विनियोग ४

यगं अग्निकर्त्तृणा विष्णुं एवित्यगि ॥ समस्तानं भवता गगनं यथायुक्तेन यज्ञा कर्म ममेन कुरु ॥ ममेष्टु देव व्याजं
न सर्वं रक्षादिना दयग ॥ गगनं पगक सामुदि सर्वसेन्यः कुरु कातस्तानं पु विभयः कुरु कायस्य गाभनं शिष्टुम्
उत्थापयग ॥ गगनं कुरु मायेन अवव्याजं पदाम्बतादि पृथमाता समर्पयग ॥ चतुर्थं पूज्यं समुत्तव नाना वाद्य
नः पूष्टं नोदयन निर्ज्वनं संपूर्णं ॥ गगनं कुरु मायेन गत्थानं छादयगः कुरु कातं गृहं पुर्वं गथा ॥ गगनं पद
क वचनः सर्वस्तानं ययग निहृष्टा ॥ सांमुदि पाद काचिच्च विचारयग ॥ दशभक्तन सर्वपाद काचिन्न इतरं ॥
उगत्य काये पदकस्य वाच ॥ ॥ गगि वचनं शुक्लं समन्विजं न पौयिकं निर्ज्वनं वचनं संपूर्णं अथग ॥ गगनं

गामदेअ केव सर्वस्वा न संअ मवा र्ण व च ने सेवा दय ग ॥ गग ४ जागा ह सं पत्त वृण म वि सम र्प थ ग ॥ ध नं सि
क वित क मा ज या ग लि ना अ य नाः दू कः पत्त वृण म नि क या ह या ना जा या ग त ग ज्ञा ना वि षु या ट व ध न या ट व थू पि ॥

अल्ला त म न क ना जा या म न त वृ सि रु याः सु क तः म कि या ग प जा ग नः सि पा दी स क स्था गः ए दि सि सा मा त वि तं ॥ थ

म नं ना ष च य पा ना अ ची न र तं ॥ ग ग ४ कू मा रं अ ज न म हा य उ सा स्था ने उ उ धा य थ ग ॥ ग ग ४ अ ज न स्य

स्व शु वा सि ना अं ज न स मा न व र्णः य उ य उा ए वि ट्ठ मि ॥ ग ग ४ कू यं पृ था पो ड कं ग म नः मा का गं स र्व प डि वा

स ने नि वृ ४ ॥ ग ग ४ सू ध म्मी व गि श्म पि ट्ठान स्य स मा चा रं स मा दि ग ४ ॥ म न पु ह न ए उ पा ग स्था न

जा या ग थ ग १

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

१ किमिवा द्वै प्रसिमा नाग मरु हायाग सकजसिलग इजचो ङग एयानक थपस मनुष्या ज्यचम २ भाकासगा गिनीपनीसे नंधाय चंद्रगा सचायमग

गे॥ गन॥ साचिगुगुमइ जंपुवेस॥ नरसर्व॥ धानं नहृद्वाः महाइयं पिगत नामः॥ एदयगु॥ पिगनाऊ अमिमिदाव
 ८०३६ मग दावकस्य इगवस्का नं पुवमं घनं पुकाभयगु॥ अस्मिदिभं कूमायन उकपूवहृद्वा दावकस्य क
 पुवमिदिभं पुकाभयगु॥ गगु॥ पूवस्य संकह पत्रिगुगु॥ जगसर्व॥ धानं॥ उगयन॥ उकपुवमं मा नापिगा ना
 मपुवमिदिभं पुकाभयगु॥ एधिवस्का नं उवने प्रातिना पुवस्य अस्य वेदना गुनाः पूवस्य स्मिहृदि पत्रिगा
 पिगा॥ उगत् पूवस्य वेदना कूमायनस्य हृद्वाः सा अगुके अजायग दावक गुगुने॥ साधू ८ पूवः अमि अदिग
 न वेदना क ह पनायगु॥ किं कायन इगु वन जागगाः कूमायन पूवस्य संवादयगु॥ गगु॥ सुमानवः महा

ज्ञान धगुचिर्गुमनयाना दनवनेगुन नरमनुषे सायानमइ धयिगुवर्षनस मय इवने व्याधकृ कूमायन नापनाग सपूलायुमिषा ८०३६ मग अमिमि
 एव्याधनं दूजअभंगुव केनागधया कूमायनाग उगुं उषूमागदिने कूमायन कृष्णपूवखन कूमायन वनाग
 कयनाचिर्गुगुया पूवस्यगधन ज्ञान पूवस्यगुसा संकहपत्रिगुमरुयाचौप्र धयाप्रसकृएने धायेरुयाचौने हिपूयिहागुयाचौने मायागु वउयागु ना
 सकयागु हरेमाधकावनावयसा मिता नं विविधिका योचौने धगुप्रकायं पात्रिगुने पूवस्य वेदना संकहनया केकेगुं पूवखन थगुदूषभायगाज ए
 ज्ञयागवाधुवि धगुपूवस्यगु वेदमनयो धमनहनागखन धगुधंनं थगुभं ससुना विमिसरे हनाचौने हसाधूदूषपूव सनाग्वकस्यन
 आमात्रिगवेदना कहनकागन कूकानन धनइगुवनेगुयाचौना धयिधका कू दूषपूवस्य केनेन ज्ञान दूषपूवने महापू

३

का प्रेना प धनगिना चोनक्र ४ जंयिकया १ हिपूयिहागुयाचौने ३

न पागय धनं का म पा ना नोन
 अथरः सुदासस्य मम प्रक पियम ॥ पुमिदिने नुगत्य कात ॥ ॐ गिवचनगुत्वा क मात्रस्य निनायुध ॥ ममचूण
 मनिहवर्तः मम किपृथाजनः सार्थिमागुत्वा तं हाहा प्रालक ह ॥ गगः सावि त्मा कनू नः गृणा हृदयय
 वादना रविष्यमि ॥ गतु वमागु क ह एव ॥ गगः जूयका ह उ उ नी स म अ य ग ॥ वनिक पूरुखं वा दना भ वः
 सार्थवाह गा भ ना धि र न ॥ एग व म म ना ग क मात्र क र्म किं पृथाजन वा धि स्तानं ज न म म ॥ ध सु धा ग नृ
 यमि पना ध वे यिः म ह गा यि न च द य र ॥ सह सा स मू पा ग यं म नि र न पो यि काः स स्व स हृ धृ त्वाः म म उ द
 न नि मि र्द ॥ संपक स्तानं भ ज र्ग त्वाः ग व ॥ का द य ग म म ॥ च पु न ॥ य ज का व स्तानं ग म म ग म नः ग त्थ

भाजगा ६३ अंननं कूमाया कूस विस्मयना जिग धननं भाजगा रुन कद्रुयाशदिनस दूनवनागजजि मलाज्यधि

नेकादयग ॥ गग ॥ बुक्काय गृहं पुविभगिः ममग वस्तान कादयगः ॥ उकस्मिसमयं नानुग स्वा अग्रधन

अंजनगाद्रुसया सनेनगना धननं जिग भाजगा रुन धनजि जिग कामरु धनगकभनानं दान धुगधस सुनाजिगजराययिहएगवने

अंजनस्य अग्रवर्मम ॥ गत्थानं ममने कादयग ॥ ॐ निममज्जान ए विषयगि ॥ गग ॥ गधकीयिन्ययशः एगव

हाहादेव जिगजमनेयाधिकार मनहावयवाववेयस धुगधसे सुनासनामध्याधवकायज धनकवतामानाजिक्काक एगयागुदिपिकयाज धाउगु मिटवाया

ममज नमकिं पृथाज नः मनपु पिचिकय ॥ गग ॥ सूदासर हृजागगाः वलुगुजः वनाहस्यैक समर्पयग वरु

हमिकं यमानरुजधलुगु वीवीजय सुदासवाधियास जयपगसगानिम विवाकमतिउगया गयाटक धुगधिय वाटवायसेहिने

हमिकं पायः मलावेगत्तजिआगगा ॥ वामैर्धुज टवमूखसायमयः ॥ अटवमूखस्यैदने चाकं काकं पादयकं च

दिकाम एमिसचूयाजय वनापिनीगंरुगगाकथ वामयसायाग धुवधनया सकन वनाहवधिया अयजायधं जंममूधितिवान

दयगपं धीगमगृ ॥ मृगधर्ममंगलगः समयाभिः गं गतः सर्वसूकः सर्ववजाह उयवने ॥ सायमयः विधि

संपूर्णविहितवधनसपद्रुपरयाज वनागत्रसं सिंहाजयान दूवयानागधं धवनाज वनयानागहिं क सिंयागस्यायगुमकाज संवम

गाः सर्वहस्तिस्तानेपुजयः वनाकयसिंहनायपपिअमः गवः दृष्टे न वनयाजनेहस्तिमर्थननसर्व ॥ अथ

विवायाजधसा ३ जयभयधसा २ लाहारगगप २

कोपागधुमिरका नेरुधनमयाज

^{विचिंतनं कुरु कायया नो}
 मूर्तिं हं हं कायमभुं न आगताः त्वं भिः वे नू सर्वं मृगं दि सर्वं जनुं विस्मया नि पु विसन ॥ कूज कूज न जं दि गियं कू मा
^{मात्रवना धनुषं सकृजं गुपि विमंगुलाया धनुषं कुरु कुरु महावेगनं विस्मयन}
 जस्य हृद्वा गगं सर्वं जनुं पु विसगा हृद्वा न वंदा जकं महा वेगनं पु विसय ॥ गगं सू दासस्य हृद्वा गगं सर्वं
^{विचा माना केन वां बंधक धया कूमात्रया विमने संषमूख विचा वां वां जना विन धनुषं कूमात्रया जना}
 जभयं आदयं समसमासां कूमात्रस्य पृष्टं गतं मूख आगता हृद्वा महा वेगं समर्थं पु विसय ॥ कूमात्रस्य प
^{पत्रिभुमरुणागे जंतुमागयाज चाका धं विमंगेन प्रियं सू दासनाम व्याधिज धराया धनुषं वना जना अग्रे यवने धनक साया विभे क}
 विरुमनं आमलक डमः कुरु पु विसगा ॥ पृष्टं सू दास आगता का गं हृद्वा गमन धवि कं नू समसमासनं आद
^{यका अगं सर्व मूख विचान कुरु काउना भिं नि नूया चाकत उत् व्या धनं धनुषं स्वया दूया ज चाकत उत् धराया ज चीन}
 यगं गतं मूखं हं कायमभुं जगं यत्पु दजनेः सू दासस्य सर्वं गमन धवि गं पु दज वात्मा का गं हृद्वा गा क
^{लान विचा या गुं जं स्वया व्या धनं धनुषं क वना साया लाल का ज ज दूया ना दिना धनुषं कुरु हृदि साया कूमात्रया ग धन}
 उना ॥ स्नानं स्पद न हृद्वा सू दासस्य सर्वं ज हृद्वा हा हा कायमभुं हासं कुरु हृदि हृदि हृदि हृदि संवादय ॥ जाजस्र

विचा आउ क साया चीन १ आधका धया जोग ३

महा वेगनं वां जनां जना समर्थ दन ले विमंगुल ३

११ मयि विहंगुल जना न क

जाग्रातायासिने चक्रवर्तिमगाय अथवागजधयवृक्षेय जिगुसपिर्न धवाधमनापं रुधकल्यानायायदूकृतिं जिभाजक्याययदूयदूय अरुमदुअह

नःनृणामाजनाजवहात्साह"अथवागजनाह"ममभयिर्वसुदासस्य"राधकल्यानाजग"जमिदिभउय"भसंज
मदु इलोहरुयासन इहगवनं कृणमनिहृयनं रुय जिगुवदामनिधरुगुरुहा जिहिमा आकासमार्गसे जधवास्थनृगयगधजि कसिनजेने विधगानं
सैइलर"एगवन"कृणमनिहृयनं॥ममनंरुणमनिपुवभयग"वृय"मार्गकाभः"पकिपुवाधयग॥"विधगा
इषविषा इहमलचंननयोध विवायागवृषिहृय यउयययवि सिनेहृगुनके मानायायगुगुधयागयानाधमामदु मागुमानेयाभा
उहव"इष्टंपुत्रिकिगै"स्वानं"कायननरविषगि॥जकावस्यसिनेहृगुनमानादानंकिंविषाजन"मिहृएगव
नेहृएगवनकिपिषाजन वंसं प्रसंलसिदेव सकनइगीगुन कृणमनिजि गजायाहोके सकनपूनेचंद्रमाया यगुरुसजन्मरुगं धविक्तविता
किपिषाजन॥कदाचिगैहृएगवनसर्वइगीयकृणमनि"जाजलावसर्वपुर्णचन्देसागरुंजमः॥जुगत्स्वान
याहृके व्याध्याहृकेसनागहृगवे पूर्वजमयाकर्मयागजरविषेग अरवकृत्र जमजमानकप्रविगेकर्म कर्म कर्मपूवार्थयाकहाय
स्य"व्याध्याहृसंएवहृगव"प्राकनकर्मन"पत्रसर्वअधियःजमजमानकयपृष्टहृआगना"कर्मपूवार्थवि
चुद्ध॥गगहृसंसावदहृजमइलरं"गुनसर्वकिपिषाजनःइर्जनस्यवीधननसर्केग॥यापजातेवासयः"स्ववं
सायरविमान संसाविजिधिके जमहृयमात्र गुनधाय सकनकेपुषाजनके इर्जनयागवृउययाय मरु यपजातेवासयाने

आमक्याय २

नस्मानगुगुत्रिकर्मनिगयधरसदांरुज २

यगुवंसया त्रिसापययि क्रुचंद्रमाहून
शोभायाधोक्र

अथनमस्तद्वरुन

शेषनमस्तद्वरुन

प्रातर्गंधपूरुषा

जीपगस

अत्रिपूरुषा

महाएयंमख

हान मनूरुयि

भस्मनिभक्तः सर्वेऽनुगमः महारुद्रवपार्धः इत्येवं प्रातर्गंधसंयापयन्नुभयिपुंरुयं महारुद्रवपार्धः ॥ मान

निमिर्लीनं

दूमात्माया गहागि सनाग

यगुधसं कुरुनात्माया चिगुरगु क्रुनं

क्रुनात्माया चिगुरगु क्रुनं

क्रुनात्माया चिगुरगु क्रुनं

क्रुनात्माया चिगुरगु क्रुनं

क्रुनात्माया चिगुरगु क्रुनं

क्रुनात्माया चिगुरगु क्रुनं

ऊया निमिर्लीनः उजात्माहस्तस्त्रिः गवः कुरुनात्माः चिगुरनममयैः ॥ गगः कुरुनायमानं कुरुनायमानं

शोभायाधोक्र

सुमनया

कावनसर्वे

कावनसर्वे

कावनसर्वे

कावनसर्वे

कावनसर्वे

कावनसर्वे

शोभायाधोक्र किं गगयसं सजर्न ॥ निकायनः वेयिहृष्टममः निकायनः कुरुनायमानं महारुद्रवपार्धः

कुरुनायमानं

कुरुनायमानं

कुरुनायमानं

कुरुनायमानं

कुरुनायमानं

कुरुनायमानं

कुरुनायमानं

कुरुनायमानं

कुरुनायमानं

सुवलाहविशुपुनामः कुरुनायमानं ममयैः ॥ गगः वायवायसु ममयैः आमलकानिः कुरुनायमानं ममयैः

नमस्तद्वरुन

मिवागि सियागुन

अंमनिपागहागिहना

अंमनिपागहागिहना

अंमनिपागहागिहना

अंमनिपागहागिहना

अंमनिपागहागिहना

अंमनिपागहागिहना

नमस्तद्वरुन उजात्माहस्तस्त्रिः गवः कुरुनायमानं चिगुरनममयैः ॥ गगः आमलकानिः ममयैः

दिवादिहीमायाग

विष्मधयिद्वि

अकायनाग

अकायनाग

अकायनाग

अकायनाग

अकायनाग

अकायनाग

अकायनाग

हृष्टाः विष्मधयैः स्यादिवा हृष्टिहृष्टाः ॥ गगः कुरुनायमानं अकायनाग पुष्पाविवायः कुरुनायमानं ममयैः

दिवादिहीमायाग

विष्मधयिद्वि

अकायनाग

अकायनाग

अकायनाग

अकायनाग

अकायनाग

अकायनाग

अकायनाग

हृष्टाः विष्मधयैः स्यादिवा हृष्टिहृष्टाः ॥ गगः कुरुनायमानं अकायनाग पुष्पाविवायः कुरुनायमानं ममयैः

दिवादिहीमायाग

विष्मधयिद्वि

अकायनाग

अकायनाग

अकायनाग

अकायनाग

अकायनाग

अकायनाग

अकायनाग

हृष्टाः विष्मधयैः स्यादिवा हृष्टिहृष्टाः ॥ गगः कुरुनायमानं अकायनाग पुष्पाविवायः कुरुनायमानं ममयैः

दिवादिहीमायाग

विष्मधयिद्वि

अकायनाग

अकायनाग

अकायनाग

अकायनाग

अकायनाग

अकायनाग

अकायनाग

हृष्टाः विष्मधयैः स्यादिवा हृष्टिहृष्टाः ॥ गगः कुरुनायमानं अकायनाग पुष्पाविवायः कुरुनायमानं ममयैः

दिवादिहीमायाग

विष्मधयिद्वि

अकायनाग

अकायनाग

अकायनाग

अकायनाग

अकायनाग

अकायनाग

अकायनाग

आकाशविष्णुग विष्णुधनन आकाशमागुवर्णधनपानाअथा कविनकुमात्रयाग
 नमाकाशगग॥ विष्णुधननमाकाशमवर्णधनप्रधानिगेनआगक॥ दानकस्यकेरुनाविगुपुअधन॥ गग॥ वि
 धाधन॥ स्वानेइहस्य॥ कौरुहृदिहृदःपराधःदानकस्यनिकावर्णमृगुनिर्मिधन॥ वृत्तपस्य॥ गग॥ माका
 मवाधयो॥ इहगवर्णपुवसगमवाधय॥ ममवाकर्णवचनेवाधन॥ किंपुयागनेनवाधनाग॥ ममनपुहा
 नंप्रहावपायगग विह्वोधरुहा पूगधसकुगरेह मपूर्वोधजामरुधयागुहासा धनकुमानस्यायधसा वानाचोनागुहासा
 नर्गुगगयग॥ चिरुवाधनाग॥ गवर्णगुहपुवस॥ गमवचिरुनवाधनाग॥ दानकस्यःइहवर्णपुवअयग॥ म
 मननसह॥ अवस्यगगयग॥ पुगगवाकर्णयग॥ इहनकुहृदिहृदःमाकाशहृदःसंवाधयो॥ गग॥ विष्णुधन
 तस्यमाकाशवर्णपुहाधन॥ इहस्यजिउदयग॥ स्वानस्यमावधग॥ अहंकातस्यावसन॥ लोकेअवस्य
 गग॥ नरुयाचीऊ वाधसनागंयिकाजवि

गया नरुयाचीऊ वाधसनागंयिकाजवि

धधध

महाएयधनसहस्रदीनसोया
कूटस्थानः सर्वताकः ज्ञानमभेन विस्त्वनैः गुणपाराः विष्णुकदधानाः संपूर्णमायाविद्याः संपूर्णनः अवसजसुता
नेत्रपुत्रपुत्रकुं हिंसाविद्याः सुमनदियगः ॥ महाकायविकः गीताकनाथः पत्रकुं मभेन प्रायश्चित्तकर्म वि
विस्त्वाययगः किंमभेन नागद्वयस्य वसासं अकूटिदिं साकैर्मया साधुं गृह्ण ॥ ममविद्यामां ० ज्ञः देवत्सर्व
वृक्षान्कपूर्वाधियगः गगनं विद्याधनस्य करुणा चिंतनं वा लीपुत्रो धेया ॥ गगनं विद्याविभाजदकनूना चि
नेत्रदायकस्य माया साह विद्याः सर्वगुहिनाथयगः ॥ गगनं द्विगियगुगियदिनं सुखेन वासनं गवदा
चकस्य संपुसन्नं नाथ पुत्रभगमनंदघागः ॥ यथायथा गमनं गथागथाः सकैरुक्त्वा नैः पुनगुं विद्यापु
जनेनायमानि २

जनेनायमानि २

मेवगुविद्या २ हिंसायायगु जिनमयूर

कनगुकायनसहस्रान

। अथयन ३

१४
१५

या ॐ न चो न वि सक ज सि न न द या ॐ ४

^{सो} ^{रथापि} कामयुधिहयाचोपि ^{सिद्धसार्धवजाग} हनं ^{वनिजावसकल्य} किमङ्गत्रवंजातसकल्यं ^{अएकल्यानसचोपि} ^{सार्धवारु} महाजनरुंयादिसक
 नीकामयुधीनिहसकपस्यः जागानं ^{वानिजातग्यापि} पेक्षेअगजनयोपिका ^{शृष्टिन} सार्धवाहाश्चमहाजना
^{यथुगुधनसयाकोपि} ^{युगुधननानाचोपि} ^{सिद्धसार्धवारुयासकनवंजातः दयाचोक} ^{मृगुयाएयहानाचोपि} ^{अपनिधसविष्मनाग} ^{जोकेअपे}
 उलायिनही ^{उगत्यानं पग्धने} सार्धवाहाश्चजनयोपिकाः सर्वमृष्ट एयेगाभया ॥ गगसपुस्तिगासोवताव
^{यजगनामनेजपिकयाज} ^{सिद्धजहीपसविष्मनापुस्ति} ^{जाऊसिगनयाधसवि} ^{लान} ^{सार्धवारुयास्काभेजना} ^{मनचानागजगुयिसमगयागुमुक्ति}
 ग्वं पुलासयनं ^{सिंहलक्ष्मीपजातावजाउसीवरिगकुमि} ॥ गग ^{सार्धवाहस्कानेनगिकजवनिजावस्य}
^{सिद्धसार्ध} ^{कोहयागउपदसविजउभूनादिन} ^{वचिचोनाजमान} ^{अंसगिष्ट} ^{प्राया} ^{गंअहनानसकल्यजनाज} ^{वदागजधिकजसययायपहुयाजःप}
 उपदअथग ॥ गसिदिननीगितं घयगु ^{प्रागपुत्तायंगगमथनपुविअयगि} ^{वावाह} ^{असात्रपन} ^{सर्वपो}
^{जासकप्रजन} ^{सन} ^{धसययाजस} ^{सार्धवारुयापेविवात्रसकल्येसययाजसचोन} ^{धूक्तसनसमदगत्रयाभारु} ^{यजगुध}
 जागान ॥ गग ^{असात्रपस्यागु} ^{सार्धवाहापविजनासर्वपग्धन} ^{अस्वत्रपेनसमदजंघयत} ^{दअपु}
^{अधनकाविज} ^{सन} ^{सिद्धसार्धवारुजागारुयाविष्मग} ^{जाऊसिपनिशननयनकुयाजहअवी} ^{धूगुपुक्कजन} ^{गीलोकनाथयागु}
 विअयग ॥ गग ^{सिद्धसार्धवारुहविष्मगि} ^{जाऊसिनिस्पमाचनपग्धयग} ॥ उगल्यकात्रन ^{गीलोकनाथ}
 सकलउधययाना १

रथापिअभायकयायनं

मिषादृसिस

हान प्रायशमिषा स्वा
उत्तनयावान

मिषाप्रयकं सायमम्याक
रुजनयाजा ३३

मः प्राचन॥ हाय२ अग्निनेवानयाकः हामतस्थानयावान॥ नासिका॥ ॐ दिव्यवाचनः दप्यन अहकायदवर्ण॥ म
 नं ॐ मंनं नागयाधः द्रव्यं धसादू नूनजालमान प्रयारुजध पासाजीवेनू ^{मिषाप्रयकं सायमम्याक} ^{रुजनयाजा} ^{३३}
 त्वत्पुत्रशगदकः विवृकः वपुनस्य पागकः कूलुलन सुवर्धुपगुरुसुः सुकेलसकू चंगन॥ सवीतकातका
 गगजगायाचीमिषा हाउपलेखानयोहनध वोननोक गुगियापात्रिगुः सायागसायागु माहुरुयाचीन हान मेहायगु विचोनया नाचीक
 लहषनः पयपसाः यकपयपयसमानयाइकापृष्टः सासाहृष्टनमाहसमसु॥ पुनवाजगीगादीविचोययग॥
 हामिसनकेग मिषाकनेग असनकेग पनाट्याचकिपयुथ व्याकं माहुरुगुसायाडी॥
 पुवित्ररुपः अअल्लयः लिः अगन्या गहसुकायसर्वगुस्ररुपयग्ग॥ गग० गृ० गत॥ गृ० गतयातसयासगालका

१६

यतातपं हनासनः हपिषा लमकिस्त्रि आह्वदयकयः स्य० २ रुग्ण विषानः रुमकिः धमाहमयीमयरुनेसं
 पूर्णैरुद्रमयीमयरु॥ ^{विगुविग} ^{रुजनयाग} विगुविगुनेः मभनः गिगुचिगु रुजनयागः धमाहमयीः सा र्ज्या अपस जानि

सधचीन२

संधिनाचीन३

अथ नेत्येतिः स स्रज्जप सत्रायामध्वसः भवनकाधिया ज्ञाप सत्राधः अन्यस्त्वास्तसाः स्रज्जपमयगत्थः

मिवास्तनादकायध्वन

उजः गथिगुसरावचनः चिगुविचिगुपदवृमः समस्तः मिवायासवादकायध्वनः आभमननसंगमयाय

अनेकशत्रु ज्ञानज्ञानगीग मूकनमस्तना वाक्थाना

रावपाभः गथिठ समातलायकं ॥ स्रवः गीगः मूकना विनावाधनायः थसकठानंः जिमनसावाभयसि

ज्ञान गथि न गुचिर्द

याक। समस्तपुकावनेविनालगनंः जिमनस्त्रिमस्त ॥ वीनामेत्यनागावद्यद्यजाधमलखा ॥ अहार्येचि

सूत्रानंशुक्रन

जिगविहृरुननयान

ध्रिगानिनि ध्वनजगुसंशयाना

मोहमयीमयश्यायप्रसानयानजस

सर्वहृवनेसकः समविहृरुवर्त्त ॥ उगत्यकावपुससयमम ॥ गगनं स्त्रीजनस्यमृत्यः पप्रपूष्यनसमी

मिवागिमकाक

अनेकमनुज्ञायागुगयस कोमयायगुमनवा

अजोयमंनवाजाया

ध्वनस्रवनागिचिवाजसोयाचीन

ज्ञानसंश

चनहृहृनृपगिहृदयपथः कामवृष्टमाहः अतातनृपगिस्वमृषयध्वनस्वदजायगे ॥ गगुदिनस

नामाहृवंधयगानः ध्वमाहृकामया लयानानंमाहृवंधयश्याभया १

हवनयायमहृक्त १ गथध्वसा १

अजिन २

ध्वन २

ध्याकात्ररुसेविदुयाचोर्क धनसंपत्ति दययोगया मुख्यसुखि ज्वरज्वापगया सिनपाउविद्या हसाधु धमाहमयीमयहपागदव्यविद्याधामज
ध्याकात्रसंपूर्णवत्तदुवाः पात्रिगाधिगः पूगगीस्यदागव्येददस्वः ॥ गग ४ ॥ साधूमाहमायांममनृपगिध १ कजिपनीसयाजिनागा
धनसंभक्तपूजयाधनसंभक्तयभावेधध

नभक्तपूजस्थानजगच्छ ॥ धयाअःवाजस्तसज्जहाअः काममरुयाअः माहमायामयीमयज्जकस्तमन
१ सि याः कपननसुदत्रिरुज्जमसिहात्रमोवमर्कः नृगेवन असंयत्रपनेहसात्रया सिहमायाध
काअचानाचान ॥ धगपुकात्रर्कः कूटकामिनीः ॥ नृपगिस्थहृदयपस्यज्जसंयत्रपसेसात्रसिहमायाजा
गजायाभाहविसगात्रयाग हान संधाकात्रः बहुद्रिथस धमाहमयीमयहः कामनृगेगरयोः ज्ञायाविगुः हनर्नयानाहज

जस्यधिजयग ॥ गग ४ सायान्कात्रिमुखमदनागुजनेपगिकामनीगीः साचिर्कनमाहमायाहनर्ण ॥ ग
न जात्रावागनाकेपूयागुरुप हः कायोनाज्जदुयाजवसनसे धर्ममर्थकामधगगागीवः सिमाहृदयोयुजः यस
ग ४ नृपगिस्त्रकामूर्कः साचिर्कयग ॥ ०० दियावसयनोज्जकस्वयुपसिमायावृन्त्र ॥ संपूर्णकाममद
हान मल्लोवायाचोर्क किस्तिनं काजगधसा ज्ञामयाकेधसा ज्ञातज्ञेनसकाटिनजानाविस

यागधनः शुभमं पूर्णप्रबधनयानायेक ॥ ॥ मरुगज्जकामजागयावसन ॥ अधिभमहावट ॥
धकार विष्णुमयानाज्ज १ नावानकनकागं ३
यात्राया २

यस्यजनपति मन्त्रनाथ

कूटकामिनिहृदिमिसा

जाजायाकृतसुवाचारुज

जाजानंरुवसां माहमयीमयहृदनाथ

सन सुनसुन

तुष्टाना

गग॥ मूर्धधरकः सुखेन स वा दय कूटकामिनी जाजा विनाथ ॥ गग॥ जाजनस्य माह माया हृदना ॥ त्वमगु

नः थ जाजानः इमेच्छिने माह रुयाथ माह विष न दाह रुयाथ धैर्य या जागत गाथ रुगा सनेत्रका नृप स

मजा माह माया मयि

वृत्त

विदित्वा नास रुक गुनाथ

मन्त्रनाथ त्वात्रयाना चीन

वानाथ जातिगन याय गग याच रुज ॥ जाजाया को की नृप ॥ गग॥ जाजनस्य रुस सं माय ग स्या सन प स्व ग ॥

निष्कसिया धि धिर त्यागा रुक गुनाथः त्वज्ञानाथ त्वात्रयानाथ वाचः रुन माह माया मय रुंधा साः जा

जायाग काम नाग म विम म या रु स्य त्वनेत्र कला हाग नेत्र काम नाग माह याना चीनः जाजाया धि सा कामा

गवध य रुयाथ काम विष रु रु या चीन ॥ धेन लिः थ गुप कायं सं वा द या यो र वा ची जागु वष ग सः ग थ

निष्कसिया ४

सां गनं ग याच रुज ४

^{ज्ञान मोक्षपीमयः} ^{युगमात्रा} ^{कविप्रकृमात्रायागुत्पद्येयाना} ^{कृमात्रनंआह्लादयकन} ^{ज्ञान}
 सतधासा॥५॥ गग॥ मोक्षमायापुत्रकाविमनः॥ कृमात्रपुत्रकाभिग॥ कविप्रनआह्लादयकन॥ गग॥ गग॥
 जि जि सुसं व्यापनंमप नपसनामपु सो को नमयजयनायाः सुधमावमिनामिधागेनंनमरः दयावीकसकनः जले कृणुमनिद्रम
 अहममनाद्यमेनकमिमनहिः गृ॥ गृ॥ गृ॥ सग्यरगस्यपुगु सुधमावमिगर्त्यनजागमम॥ सर्ववत्तवृणामनिमा
^{विप्रकृमात्राजिधुकाकुरुसायाः दाह} ^{नेपगिनाजके} ^{किगगिसोच्छाग} ^{ज्ञान} ^{कृमात्र} ^{रोगयापयारन} ^{जिग} ^{गग}
 लोवीयकृमात्रममः कृजयगं धृष्टगुगागानृपमिः कन्यहृगुगामम॥ गग॥ किंवाधृगगनिमिर्दनममनं सि
^{कागके} ^{कानेधसा} ^{दाहजि} ^{किजा} ^{निप्रमिपेरया} ^{धृषननाः} ^{रोगयानाः} ^{कं} ^{धृयोकता} ^{रोगयान}
 नहाच्छाविगः जिष्टगुगाकन्यहृगुगासमासयसूचनयाज रोगरत्नो गव प्रकाकनाधृ रोगः॥ गधकं र
 गयायदयिः अथ अधर्मिपापिहरर्जनः विनोपनाधनिजदाषः वातकम जिगगधिग्वद्वसमूडसकृमि
 कतः कमहापापिहरनपूनर्वाताममजिकर्मनी धृद्वसमूडगययानागजिगीयधून॥ गग॥ धनं लि
^ज ^{दानेगुद}

कथापि ह वा ज्ञात जिता हागि सजा गधक धाले न ग ४ पु न वीत । इह या यध क धि सा । व्याव ह ५ । पु का ग रु या ॥ नु
 या नि गि ज्ञा य न या ना क्रि यः भा ह न य क या ग चा नः ग । हान भा ह न य क या न य वा न ग या ग ह्या य ग न हान ज्ञा य ना ग व च न
 ग ल्यु का थ न ज्व य न मि ह न य धा वि ग य स्य ग न ४ भा ह न य धा वि ग न पा न स्यः भा च न ए व ॥ ग न ४ पु र्व वि धा धि न
 नृ प ना ग क वि नः नृ ग य स धं दा ह नृ उ वा स ना पा य मा न नृ मि ह नृ ह सा पा य मा न ग अ धि न य ज या ग दि न म ह लान यो अ
 व च न दा न क ह द य स स म ४ स म् पा ति ग य म ह म् पा ति ग य व पु न ॥ अ स्मि दि न म ह म् पा ति ग य व पु न ॥ पु न

वी न भा ह म यी रु या ग स र ग वि य धा या ॥ नृ उ वा स ना पा य मा न नृ मि ह नृ ह सा पा य मा न ग अ धि न य ज या ग दि न म ह लान यो अ

य ध क रु ग नृ च ध क ध या ॥ पु न ल्यु का न ग रि स म यः पा ष्टः या ग रि ष्य क का स्य रु ग नृ मि का धि जी दा रु मा

व का ॥ सा मा न्त्र ॥ ॥ ग न ४ पु र्व वि धा धि न मि ह नृ ह सा पा य मा न ग अ धि न य ज या ग दि न म ह लान यो अ

अथाना सकलदयाचोकष
अपिपामं पिपागकनो
अजाहदयकन

क वं स्यं नी अमा मया असु पिपानजन
क वं स्यं नी अमा मया असु पिपानजन

धजिगेनासर्ववादीविधानस्यैवाद्यय॥ गग॥ सर्ववादीसंपूर्णमागान्स्थानेनैवविप्रयय॥ गग॥

सूधमीवगिनीयो ज्ञानेनो नो सकलवादीकृतकनाशकविनकमात्रकृतयोः धृगुषमात्रेणो विप्रययः पूनयागुपनाकर्म अला

सूधमीवगीसमृपाशुयसर्ववादीपुवाधयोवमात्रस्यवचनसूत्रा॥ गथासगिसधमीवगि॥ पूवध्विआसम

नंसंरुक्थयने कायित्येनगनरे सोस्य धागगगपिकया विधायन धृगुगी हागयमानरुगगगुगयर्थयाजीयाः कमात्रसोया

चिग॥ गगुंकापित्यगगवसमासकपुविअगिपुणसयने॥ गगुमनसमाताव्यदअयथस्यपुगुवमात्रसू

मासनधमकाययाद्यावसीया जाहदयकन हृपुगहृषनेवाअयुना जाहाहिकपदनाजावीन दायककवित्रकमाते

धमीवगिवचनसवाद्यसंपुमादिग॥ सूष्यनवासय॥ गग॥ याद्यहियकसमागम॥ गग॥ दायकस्यपु

नयाः ज्ञापायागुद्वयमनाम जागद्वधमोरुहयाज दारुयाननिद्रिदरुयाः अग्निसंस्कारमयासेऽन धृगुपापेओ नयायन

वैरु॥ खसुसुत्रया॥ जागद्वधमोरुवसन॥ धृगुगुगागैगगगिजंअग्निसंस्कारपुपाग॥ गग॥ पायचिकीदि

दिपकायविधिपूर्वककृपाज्ञापाहृयाकर्मयानो सृगदिनसोयाविधिपूर्वकयानाकर्मविधिआपनयाजोवन

यविधिपूर्वककृयाकर्मसमाचय॥ गग॥ वगुंरदिनविधिपूर्वकियाकर्मविधिस्थापयग॥ गग॥ धनेतिक

प्रायचिदुकाररुन॥

सपिनस १ जातसकीरुजधसंसायामाधयकाविधायकक

यापुग धधकाधयाःधातज कायपुग४

धृगुप्रकाशं कृमाययातं तं विकयापिनं किजायातं असत्वाद्वास्तविकं

विजकुमावनेः अहयि यत्नव्यवसायः जागृतिष्यककयागजागृते ॥ पुर्वदायकस्यः सद्यो जातिविरु निवृत्त्या पाया
समृद्धसकृदनेकोपाशुवप्रसा पुनर्वा धृगुपापसचनेयाया लीगनयागिद्वयनयाः अतोत्रमकजाजा
निनिर्णयं समदावयेकं ॥ तस्य गिपाथष्यपिगेवत्रकोइहत्यानिगु स्त्रो निवयवुर्गु ॥ ४॥ ४॥ ४॥ हिः आनयादि

धृगृतोतमकजागमेवमयूः धपापि हृदेवदह धका धक विवीचजागं ग्वता गा जागृत स्त्री ना धर गगया ना
॥ कातमृग्यूरुयागि प्रावधपापननयकवासरुतं सरुगु वर्ष पर्यन्त धपाप रोगयाठागि आगि गतं ध

यातमनपादोगुहृसद्याचरुतं ॥ जनेयनिसः कल्पकल्यानकृपयइसनैः धमं या नागु कर्म कृयमरुगः वि
नालगन ॥ जन्मावर्क कृमपविचयेः पच्यमापयश्चाद्यागि स्तुतं जलं गन्तुं ग्रावगका नयपि ॥ गे स्तुनी नाय

अंनगपूषपनि स्थनं जन्म मय पमाया

इयधगेगायागरन
नयकवासनां ५

नादृष्टनकयय

सा न

अत्र सनः सति प्रयसे राजयोग
सपयिक ये काय पापे वरकः कल्याणायै नपि नपूषक कर्मणः पजहानि ॥ सत्सत्त्ववाच्यानाः दण्डाकृतक
मीमांसनाः मिथु कर्मनातनाः पापकर्मनातक ॥ अरकं ग्रीयते नैव कर्मकापिक दाचन सा मागी प्राप्य
कातचं रुतं किं त्वत्तु दहिना ॥ गगं तु सल स अस्ति त्वाः दीर्घं न त्वं सद्धम समाचय मुनिश्च वस्य समुपाचय
नवविन्दुः दं नु वे पृथिवि विधात्रिगः सल सय समुपात्रिग ॥ एगव न स साव सर्वयाक दहिना स्व स्व कर्म रुतं ॥
स्व कर्म ये सत्त्व ४ त्वल गग ४ ॥ शुभूना एगव किं किं कर्म समाचय ॥ एगव च स वज काय सर्व गुण एगव न
सपूने गेगु गत न सैरु गं असि गि वंज शरि गगि हवन व्यापिगः ॥ देवा गि देव देय नव सूरत रं व

अत्र सनः सति प्रयसे राजयोग
सपयिक ये काय पापे वरकः कल्याणायै नपि नपूषक कर्मणः पजहानि ॥ सत्सत्त्ववाच्यानाः दण्डाकृतक
मीमांसनाः मिथु कर्मनातनाः पापकर्मनातक ॥ अरकं ग्रीयते नैव कर्मकापिक दाचन सा मागी प्राप्य
कातचं रुतं किं त्वत्तु दहिना ॥ गगं तु सल स अस्ति त्वाः दीर्घं न त्वं सद्धम समाचय मुनिश्च वस्य समुपाचय
नवविन्दुः दं नु वे पृथिवि विधात्रिगः सल सय समुपात्रिग ॥ एगव न स साव सर्वयाक दहिना स्व स्व कर्म रुतं ॥
स्व कर्म ये सत्त्व ४ त्वल गग ४ ॥ शुभूना एगव किं किं कर्म समाचय ॥ एगव च स वज काय सर्व गुण एगव न
सपूने गेगु गत न सैरु गं असि गि वंज शरि गगि हवन व्यापिगः ॥ देवा गि देव देय नव सूरत रं व
न आह दय किं एगवा जिने दगा विन मि पाय दन
गवन ३ शगम १ मइ १
यमपात्रा १ क १
पान २

अत्र सनः सति प्रयसे राजयोग
सपयिक ये काय पापे वरकः कल्याणायै नपि नपूषक कर्मणः पजहानि ॥ सत्सत्त्ववाच्यानाः दण्डाकृतक
मीमांसनाः मिथु कर्मनातनाः पापकर्मनातक ॥ अरकं ग्रीयते नैव कर्मकापिक दाचन सा मागी प्राप्य
कातचं रुतं किं त्वत्तु दहिना ॥ गगं तु सल स अस्ति त्वाः दीर्घं न त्वं सद्धम समाचय मुनिश्च वस्य समुपाचय
नवविन्दुः दं नु वे पृथिवि विधात्रिगः सल सय समुपात्रिग ॥ एगव न स साव सर्वयाक दहिना स्व स्व कर्म रुतं ॥
स्व कर्म ये सत्त्व ४ त्वल गग ४ ॥ शुभूना एगव किं किं कर्म समाचय ॥ एगव च स वज काय सर्व गुण एगव न
सपूने गेगु गत न सैरु गं असि गि वंज शरि गगि हवन व्यापिगः ॥ देवा गि देव देय नव सूरत रं व

यथात्रयासुप्रियसुशोभनः कथयन्तु गथाघातः

ज्ञान कर्मवशासनं

मंरुप मागुवायहन हृदिधनामर
हृदयक मागुवायहन हृदिधनामर
हृदयक मागुवायहन हृदिधनामर

जकायागुपाषाणसहायनचयन ॥ पञ्चकुर्मवशासनं सैरुफरुगयैदवनममाष्टापिग ॥ रगवानुवाच
धंदस्यावांसिरामोनिजनवः प्रकगुचिरुयानोहृमात्र वृद्धवमसंघयाअपेनजना अहमिबुर्गचययानाअः हनेमात्र हान अविचिनमकसस
साधुगृधूमहाहृत्रकागुचिरुसमाधायगितस्वअपभंगत्वाँ वेवधनामबुर्दसमावय ॥ गगुविचिम
कएनेत्रयापानागेरुपिकवासकनदयाचोकप्रोनियाजिवयाभासायोगउधः धरु धु धुअहमिबुर्दचययानाः नोकअवयागुआहृना
हानयकसंअधयगुमहर्गिः सधप्राविपुवाधया ॥ उगर्दिनबुर्दनाजसमावयागुीलावअधतस्यआहृः ॥
कवियरुमात्रनः आगतिरुयागं दारुयागं हिंसाकर्मयागः श्रीपगसुवीधधतीयागे वचनआहृदयकाहृउपासनोपांना अहमिबुर्द
वृमात्रस्यगुनचिरुः अहृगुगास्यमावयग ॥ पञ्चकुमा० वस्यवचनपरिचिनयग ॥ समूपासिगवामहृ
हिंसाधयागुहृगु वृद्धयसया वृद्धयमयास्यआनमनका ॥
म्याहिंसाभाविविधयाग ॥ अहंकाजीरुयागः धनियादिनसअहृमिमहृरातपाउअलातमनेदारुयागस्या
नावितं ॥ पञ्चकुअहृमहृयागः अहृमीउपासकर्ममयाग ॥ धनननजकसहृगयाग ॥ गगुसंगाप
ज्ञान पुसंगापचाया

ॐ ^{उत्तरमास} ^{पुनर्निर्माण} ^{आदिदशाह} ^{सनादिनाम} ^{मृदिगाउ} ^{धुगुपुन्य} ^{पुलव} ^{पुनर्विनाकाय}

सर्वजन्मजन्माह्वयं प्राप्तामि वापदं अहं अहं कर्मकायिगं चतुर्विधं विनागं पुनर्विनाका
सवित्ररुपाः दया चो कया प्ररु नाभ वरकायमवित्ररुपाः रुद्रचिह्नः जदलादानध्याः लकयागसिनेः अहमिन्नरुचययाग धुगुपुन्य
यश्मधनसर्वपापश्रय ॥ वरकाय शुद्धचिह्नं एव ॥ अदलादानं सर्वपापनिर्मितिवरुनाजसमावृतं ॥ पुन
या पुलवनः दया चो क दृष्टरु नाभन ^{यागहने से वापि सद्यो न कि भां अरयवदी मिथ्या को मेरु क गोपना की या धुगु वरु या}
त्युन्धपुलवनसर्वदुःखकायिगं चक्राके पाणिपादसर्वसत्त्वा एव तमिथ्या कामपयि वर्जयत ॥ वरुना
नागुरुन ^{सकन दया चो क एव या अ} ^{धुगुपुन्यपुलवन} ^{संपूर्णनागनाभन सवित्रपादरुपा आपुववरुया} २१
जनाहृतं सर्वसंसारमाह समपयि विनय ॥ पुनत्युन्धपुलवनसर्वपापनाभन पयि पृष्टाग आपुषवधेय
पूयागुवर्णसमानं धिना ^{हान रु से ना व द्रा व नागना} ^{सत्यवादि रुपा अ जह मि व रु या नागुपुन्य नागद्वि व माह ना अ रु पा रु नाभन}
गुहर्वर्णसमानं ॥ गगह मृषावा दपयि वर्जयत ॥ सत्यवादि वरुनाज कर्मनाहृतं नागद्वि व माह नाभयन ॥

रुने अगित्याउगुः अगिसाहस्यः गाहाकस्यः जिह्वाः मरुयाः अगिन कामल स्रुतग म्हीवगु स्रुत रु या अत ॥

वचकदयाअवेदयाचोकर
कवत्यर रुयाअवर
गुनीवगाध रुमयाध

विमलसूत्राय नमः ॥ धर्मसमाधि मनसा ॥

धर्मदत्ता गुणध

सिद्धयार्थं पञ्चकर्मदया

धर्मनंगुननंप्रदया

हृन् जंवेयसहाज

या हर्षेणुमादयापसः॥ धर्मसमाधाय बुद्धिं राजसमावनात्पुं॥ सिद्धयार्थं पञ्चकर्मदया धर्मनंगुननंप्रदया हृन् जंवेयसहाज

नमः ॥ नमनिष्ठाया नो धर्मदत्ता गुणधने दायस्वाधु वेदु मायाधु गुणधु वः धियपूदं नं नंप्रदया ॥ द्वित्रिगुणवसंगविशुप्रमान

पिनलजयनः॥ मृपवासकर्मनात्पुं॥ इवकिं नुनिष्ठाकर्मसमवेत्तुं च गुदगदकर्मपूर्व ॥ हास्ययास्यपुका

गजधसाध्यागुगजदेगदिः यत्रापिकथयिनाचोनः स्वानमोशकावायागानः गुहाहृतिगयासायगुपः उगन्वेयानोअ धगुपुन्ययाकै

अगिंदगदिगं गमः सर्वातं कातह विगं पुष्यमाता अगिगंः गुहाहृतिं किं पुमानेन बुद्धकर्मसमाचन ॥ नृग

अनूरावनः गुगंधवा सनादया हंगुमिस्वाहया गुहाहृतिमाहया सगुनदयाचीकः ध्याः मः वाज तात्रताअ

त्यन्यानूरावनं जीतस्वरूपः गुगंधयुक्ः अकः ॥ नृयै गुहाहृतिमाहया सगुनसंपूर्ण ॥ नृयैगीगं वाघपैयिवर्जि

उकचिर्दयानोअ गुहाहृतिमाहया उपाधगवुद्धयाना धर्मदत्ता गुणधने नंप्रदयाः सर्ववर्तुन गजपकागहगुसवित

न ॥ उकचिर्दयै गुहाहृतिमाहया उपाधगवुगकर्मनात्पुतायाय स्रयत्रनसंरुगदि व्यनृपगं जपुकागिगकाय ॥

हने अगितागाः आसनगात्रगाः संगुहृगुहृचिहृयानाः उरुमवर्तुचतपापूधनगधिंशुहृतधा

जानेगु ४ पूना ४ कवयः संपूर्णरुया ३ वनहृयगः हायगुः नथायग

असंखडन ४

मिसानंगिया पातपुनावनया गुगसगन नूरुयाध

माने ४

ज्ञान
जयिगुआसन
वृद्धवर्धिसुध
आसन
सर्गमयपागायंतानः
विष्णुआसन
वृद्धवर्धिसुध
आसन
महादेवआसन
धधिगुरुतान

साधकवितकूमाययाग॥ प्रासनैगुयत्तासनः स्वर्गमयपागातासनः विष्णुवृद्धवर्धिसुधनेपायग॥ भवनेमि

यानेन चययायमरुस्त्रिनासनवाडाउमायतंगयाग॥ गग॥ गिउत्तस्यसमृग्पुतागं किमेदावगठंसेवेताकपाता
स्वाययागः गुपू माप्रः वेवाः दशः किजाधमधकात्रिः नमस्काययानाग नमिगुरेयाग उरुमगुः सियसेउवीषचूगमनिदयाग तविअस
चगुवमागापिगाउ वृजागागिगिसर्वेकगाउरतिनमस्तुत्या॥ नमिगुवृहेरुममीताउ व्रीषचूगमनिपुण्य

अभिउत्तजिप्ररुया ॥ सकृत्प्रोक्तया दर्शनमयाक
उच्चगिउसामान्यसेवेताकस्य दंअननराविष्यगि॥ उधूरुजः अगिकातवनीचकनताकस्यकेअसंपूर्ण॥
धूमिउत्तपूयेरुया दगाकूअययागुपूयापुतावेउयाषदवगयापुतावं
उगलेरतउ नंदगकअतपूथपुतावेउ व्रीषगनामवगादमी गृनुदीर्घनटवंगुहातकिपुतावस्यदंअ
दगाकूअययागगग गिउत्तयासननगना केगपिनिगअकृतावमनस्य स्रुगयामनेचकंसहिसागायगा कोयमात्र करुणात्मा
कूअतकातिग॥ गिउत्तस्यअयवनीगत्वापयसयुनेरावगः सिसिहासंपूर्ण हिसागयनैयजिगज॥ कउ

ज्ञान

[illegible]

५-ऊरधाययाग

स विप्रश्नया ५

यका १

ॐ नमो नमो ३

कथि३ जपा५२

二

80

五

वाधिमंलुपमहाविहारीमंलुपंनये
विपुलतयाभयनभयनना
जिं वनागुयायकावनसं
वाधिसन्याय
निर्मिनिन
वापदभना च्यागात्रंभयाव

धिमंलुपनसंपूर्णगुणतुल्यभयनममंलुपार्थपयार्थसिद्धिकावर्णवाधिसन्याय
नसंलुगगधाययानिः
हगुनभयनभयन

ज्ञान
संपूर्णगुणतुल्यभयनममंलुपार्थपयार्थसिद्धिकावर्णवाधिसन्याय
नसंलुगगधाययानिः
हगुनभयनभयन

यशस्य॥प्रातिहिंसापयसाहयनभयनममंलुपार्थपयार्थसिद्धिकावर्णवाधिसन्याय
नसंलुगगधाययानिः
हगुनभयनभयन

मिसाभिसननेपुन्यगुनंभयनभयनममंलुपार्थपयार्थसिद्धिकावर्णवाधिसन्याय
नसंलुगगधाययानिः
हगुनभयनभयन

लकातुधायनपयिगेजसगीननृपवाद्यउद्युभयननादिपयिगेज॥केवलसूकाष्टमिवरुधायिगेज॥
गवंहस्वामिःदयाचोकसर्वहृनार्थधायकाविष्मकः
नसंलुगगधाययानिः
हगुनभयनभयन

रगवजगकासा॥रगवन्सर्वहृनार्थधायकाविष्मकः
नसंलुगगधाययानिः
हगुनभयनभयन

नसंलुगगधाययानिः
हगुनभयनभयन